विकास पथ

जून- 2014

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लि.

संरक्षक

श्री राकेश सक्सेना
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री आर. एस. खुराना
निदेशक (परियोजना)

श्री नरेश चंद्रा
निदेशक (तकनीकी)

संपादक मंडल

श्रीमती अलका अ. मिश्रा
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी

श्रीमती मेघना दत्ता
प्रबंधक मानव संसाधन

श्री प्रदीप कुमार
राजभाषा अधिकारी

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ क्र.
01	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	03
02	निदेशक (परियोजना) का संदेश	04
03	निदेशक (तकनीकी) का संदेश	04
04	वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी – का संदेश	05
05	मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी	05
06	राजभाषा अधिकारी का संदेश	06
07	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 24.01.2014 को एमआरवीसी का निरीक्षण	07
08	राजभाषा नीति के संवैधानिक, वैधिक एवं प्रशासनिक दायित्व	09
09	अच्छे दिन बनाम बुरे सपने	11
10	ऑन लाइन आरटीआई आवेदन-प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी तथा कठिनाई मुक्त बनाने का नया तरीका	12
11	एम.आर.वी.सी. स्वास्थ्य शिबिर	13
12	कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व संपोषणीयता (सीएसआर व एस)	14
13	बहु खंड डिजिटल धुरा गणक (में. फ्रौशर द्वारा निर्मित) के प्रशिक्षण एवं परीक्षण केंद्र का उद्घाटन	20
14	मध्य रेलवे के ठाणे - दिवा स्टेशन के बीच पांचवी एवं छठी नई रेलवे लाइन का निर्माण	21
15	मुंबई के उपनगरीय स्टेशनों पर अतिक्रमण नियंत्रण	25
16	डीसी-एसी परिवर्तन कार्य एमयूटीपी II	27
18	नए उन्नत बुकिंग कार्यालय का निर्माण	28
19	यात्री सुख-सुविधा मदें	30
20	अश्वत्थामा	32
21	कविताएं	33
22	ध्यान और आत्म साक्षात्कार	34

पत्रिका मे छपी सामग्री से संपादक अथवा एमआरवीसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संदेश

हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका विकास पथ के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इससे जहां एक ओर राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिलेगी, वहीं अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने का यह एक सशक्त माध्यम बनेगी ।

कार्यालय के अधिकतर अधिकारी, कर्मचारी, हिंदी में प्रवीण हैं । सूचना प्रोद्यौगिकी के इस युग में आवश्यकता है कि कंप्यूटरों पर हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जाए । आप सब अपना अधिकाधिक कार्य कंप्यूटरों पर हिंदी में करें, तभी सार्थक रूप से हिंदी का प्रचार प्रसार हो सकेगा ।

पत्रिका में साहित्यिक रचनाओं और कार्यालयीन गतिविधियों के अलावा तकनीकी विषयों को भी शामिल किया जाए, जिससे इसकी उपयोगिता को बढ़ाया जा सकेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभ कामनाएं ।

(राकेश सक्सेना)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हमारे कार्यालय में राजभाषा पत्रिका विकास पथ का प्रकाशन किया जा रहा है । पत्रिकाओं के माध्यम से हम अपने विचार आसानी से दूसरों तक पहुंचा सकते हैं । इससे जहाँ एक ओर कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने के प्रति रुचि जागृत होगी, वहीं उनकी साहित्यिक प्रतिभा को भी उजागर किया जा सकेगा ।

हमारी योजनाएं तभी सफल होती हैं जब आम जनता द्वारा उनकी सराहना की जाती है । अपने कार्यकलापों की जानकारी आम जनता तक पहुंचाने के लिए हमें जन भाषा को ही उपयोग में लाना होगा ।

आप सब अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके उदाहरण प्रस्तुत करें। मुझे विश्वास है कि ''विकास पथ'' का यह अंक सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

धन्यवाद ।

(आर एस खुराना)
निदेशक परियोजना

संदेश

मुझे यह जान कर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि एमआरवीसी द्वारा प्रति वर्ष राजभाषा पत्रिका ''विकास पथ'' का प्रकाशन किया जाता है । राजभाषा की प्रगति के लिए आवश्यक है कि कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को बढ़ावा दिया जाए । इससे उनका ज्ञानवर्धन तो होगा ही, साथ ही हिंदी में कार्य करने के प्रति रुचि भी उत्पन्न होगी । आशा है कि इसमें अच्छी अच्छी रचनाओं के अलावा कार्यालयीन गतिविधियों की भी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी ।

पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी से अनुरोध करना चाहता हूँ कि अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करें तथा इस कार्य में अपना योगदान दें ।

मुझे उम्मीद है कि विकास पथ पत्रिका अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगी ।

धन्यवाद ।

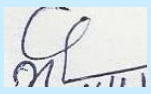

(नरेशचंद्र)
निदेशक तकनीकी

संदेश

विकास पथ पत्रिका का प्रकाशन हमारे कार्यालय के लिए गर्व का विषय है । इससे कर्मचारियों को हिंदी का कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी और कार्यालय में हिंदी का वातावरण तैयार किया जा सकेगा । पत्रिका में कर्मचारियों की रचनाएं प्रकाशित होने से वे उत्साहित होते हैं और उनमें जागरूकता आती है । इससे उनका मनोरंजन के अलावा ज्ञानवर्द्धन भी होता है ।

कार्यालयों में हिंदी का काम काज बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि कर्मचारियों को अपना कार्य स्वेच्छा से हिंदी में करने की प्रेरणा मिले । मुझे आशा है ''विकास पथ'' अपने इस कार्य में अवश्य सफल होगी ।

पत्रिका आगे भी नियमित रूप से छपती रहे इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

धन्यवाद ।

(बी के मेहरा)

वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी -I

संदेश

कार्यालय में प्राय: कर्मचारियों की यह धारणा होती है कि हिंदी में बोलना और समझना तो आसान है किंतु लिखना कठिन है, क्योंकि इसके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलते । शायद लोग हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने में इसीलिए कतराते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि, हिंदी में काम करने पर उनसे गलतियां होंगी । उनकी इस हिचकिचाहट को दूर करना अत्यंत आवश्यक है । उन्हें बताना होगा कि, हमें शब्दों के हिन्दी रूपान्तरण के लिए रुकना नहीं चाहिए, बल्कि अंग्रेजी शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी में ही लिख कर आगे बढ़ना चाहिए । प्रशासन द्वारा समय - समय पर हिंदी कार्यशालाएं चलाई जाती हैं । इन कार्यशालाओं में राजभाषा संबंधी नियमों की जानकारी देने के अलावा हिंदी में काम करने का अभ्यास भी कराया जाता है । कार्यालय में हिंदी में कार्य करने हेतु विभिन्न प्रोत्साहन व पुरस्कार भी दिए जाते हैं ।

राजभाषा संबंधी कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए हिंदी का वातावरण तैयार करना जरूरी है । पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इस प्रयास की एक कड़ी है । आशा है कि आप सभी के सम्मिलित प्रयास से हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका *विकास पथ* अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निरंतर आगे बढ़ती रहेगी । आप सभी से मेरा अनुरोध है कि, अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करके हमारी राजभाषा को सम्मानित करें ।

(अलका अ मिश्रा)

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी

संदेश

24-1-2014 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा एमआरवीसी का निरीक्षण किया गया । कार्यालय के उच्चाधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग, योगदान से यह निरीक्षण अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ । निरीक्षण प्रश्नावली तैयार करने, कार्यो को तत्परतापूर्वक करने एवं निरीक्षण के सफल आयोजन हेतु अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा संबंधित 13 कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया । साथ ही रेल मंत्रालय के निदेशक राजभाषा श्री के पी सत्यानंदन, उपनिदेशक राजभाषा श्री जे एस नगरकोटी को भी उनके द्वारा समय समय पर मिले मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देना चाहूँगी ।

एमआरवीसी की विभिन्न परियोजनाओं के चलते राजभाषा संबंधी काम को कभी अनदेखा नहीं रखा गया है । पर्याप्त परिस्थितियों में इस दिशा में निरंतर प्रयास किए जाते हैं ।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमारे द्वारा किए गए कार्यों को उजागर करने और नए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी को प्रोत्साहित करने के प्रयास सफल होंगे ।

(की वि परांजपे)
पूर्व राजभाषा अधिकारी

संदेश

भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है । हिंदी के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है । हमारे संविधान निर्माताओं को पहले ही इस बात का आभास हो गया था कि यदि भारतीय संस्कृति को कायम रखना है तो हिंदी का विकास करना आवश्यक होगा । शायद इसीलिए संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है । हिंदी की सेवा को देश सेवा कहा जाता है ।

एमआरवीसी की राजभाषा पत्रिका विकास पथ कर्मचारियों को साहित्य सृजन की प्रेरणा प्रदान करती है । पत्रिका के लिए उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक विषयवस्तु उपलब्ध कराने में सभी लेखकों का सहयोग रहा । पाठकों के नीर क्षीर विवेचन एवं उपयोगी विचारों का सहर्ष स्वागत है । इससे पत्रिका को अधिक मनोरंजक व उपयोगी बनाने में अवश्य मदद मिलेगी ।

(प्रदीप कुमार)
राजभाषा अधिकारी

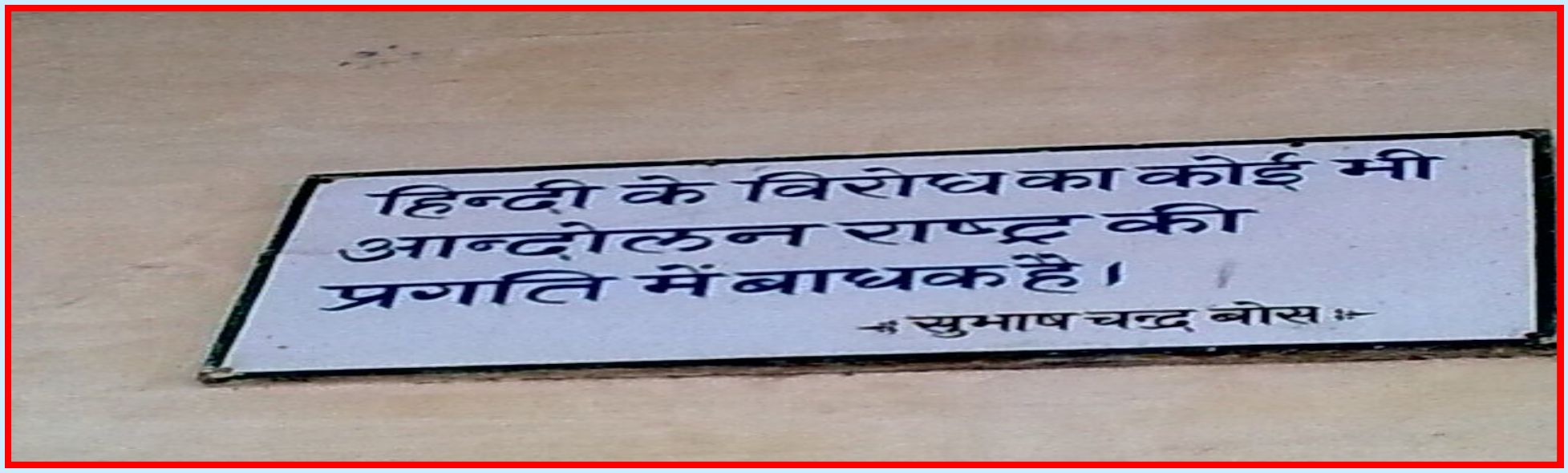

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 24-1-2014 को एमआरवीसी का निरीक्षण ।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 24-1-2014 को एमआरवीसी का निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के दौरान संसदीय समिति के सदस्यों द्वारा हिंदी में हो रहे कार्यों की सराहना की गई । अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने निरीक्षण कार्य सफलता पूर्वक होने पर संतोष व्यक्त किया तथा 13 कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया ।

दिनांक 24-1-2014 को संसदीय समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण के दौरान उनको दिए गए आश्वासनों पर इस कार्यालय द्वारा की गई कार्रवाई इस प्रकार है :-

1. दिनांक 25.2.2014 के पत्र सं.एमआरवीसी/राजभाषा/2014 सं.रा.भा.स.का निरी.के अनुसार 3/3/2014 से जारी एक विशेष संपर्क/प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी जानने वाले प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी से संपर्क कर उन्हें अपेक्षित सहायता दी गई और प्रोत्साहन पुरस्कारों के लिए भी प्रेरित किया गया, अधिकांश कर्मचारी अपना अधिकांश काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित हुए हैं । सभी कर्मचारियों ने अधिकतर कार्य हिंदी में करना शरु कर दिया है ।

सभी प्रवीणों द्वारा अपना शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जाएगा । - इस प्रयोजन से दिनांक 09/04/2014 को व्यक्तिश: आदेश जारी कर दिए गए हैं । सभी प्रवीण अपना शतप्रतिशत कार्य हिंदी में करने का प्रयास कर रहे हैं ।

'2. क' क्षेत्र से प्राप्त अंग्रेजी पत्रों के उत्तर भी हिंदी में दिए जाएंगे । - दिनांक 24.2.2014 को संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में प्रबंध निदेशक ने सभी विभाग प्रमुखों को 'क' क्षेत्र के अंग्रेजी पत्रो के उत्तर हिंदी में भेजने के लिए आदेश दिए हैं । तदनुसार अब अधिकतर अंग्रेजी पत्रों के जवाब हिंदी में दिए जा रहे है ।

3. पूरा काम हिंदी में करने के लिए अनुभागों को शीघ्र ही विनिर्दिष्ट किया जाएगा । - दिनांक 12.5.2014 के पत्र सं.एमआरवीसी/जी/1042/3/बैठक/2014 के अनुसार और दो अनुभागों को पूरा काम हिंदी में करने के लिए नामित किया गया है । इस प्रकार अब कुल 5 अनुभाग नामित किए गए हैं ।

4. दो अनुवादकों का पद सृजित करके शीघ्र ही भर लिया जाएगा । - दिनांक 09.04.2014 के का. आदेश सं../एमआरवीसी/ई/59 द्वारा एक कंसल्टंट-आशुलिपिक/अनुवादक की भर्ती की गई है

संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन
राजभाषा नीति के संवैधानिक वैधिक एवं प्रशासनिक दायित्व

राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का यह उत्तरादायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम और नियमों तथा समय समय पर जारी निर्देशों का न केवल अनुपालन किया जाए बल्कि इस प्रयोजन हेतु उपयुक्त और प्रभावी व्यवस्था भी की जाए ।

(क) सरकारी दस्तावेज एवं पत्राचार

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के तहत बताए गए 14 प्रकार के दस्तावेज हिंदी एवं अंग्रेजी में साथ साथ जारी हों । साथ ही सभी नाम पट्, सूचना पट्, पत्र शीर्ष, लिफाफों और लेखन सामग्री आदि पर शीर्षों को हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में लिखा जाए ।

रजिस्टरों और सेवा पुस्तिकाओं में विषय पहले हिंदी और फिर अंग्रेजी में लिखे जाएं और आवश्यक प्रविष्टियां भी हिंदी में दर्ज हों ।

हिंदी में प्राप्त या हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना आवश्यक है । साथ ही ''क'' और ''ख'' क्षेत्र से राज्य सरकार एवं गैर सरकारी व्यक्तियों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिंदी में भिजवाएं एवं लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें ।

हिंदी में प्रवीणता प्राप्त सभी कार्मिकों को टिप्पणियाँ और प्रारूप को मूलरूप से हिंदी में लिखने का निदेश दिया जाए ।

(ख) लक्ष्य समीक्षा एवं निरीक्षण

राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है । वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित क्षेत्रवार लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आपके मंत्रालय एवं अधीनस्थ/संबद्ध और स्वायत्त कार्यालयों द्वारा सघन प्रयास किए जाएं ।

कार्यालय प्रमुख द्वारा ली जाने वाली समीक्षा बैठकों में हिंदी संवाद एवं हिंदी के प्रयोग की मद भी रखी जाए संगठन एवं प्रबंधन (ओ एंड एम) तथा प्रशासनिक/वित्तीय निरीक्षणों के समय निरीक्षण दल द्वारा राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा भी की जाए ।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग की समीक्षा हेतु तिमाही प्रगति रिपोर्ट सही आंकड़ों सहित प्रत्येक तिमाही के समाप्त होने के 10 दिन के अंदर भिजवाएं ।

(ग) प्रोत्साहन

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु राजभाषा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का प्रभावी उपयोग करें ।

विभागीय पत्रिकाओं में अपने कार्यालयों से संबंधित विषयों पर गंभीर एवं शोधपरक लेख प्रकाशित करवाए जाएं । शोधपत्र/प्रस्तुतियाँ/वक्तव्य यथासंभव हिंदी में दिए जाएं । संगोष्ठी की कार्यवाही को पुस्तक के रूप में भी छपवाएं । वर्ष में कम से कम एक तकनीकी संगोष्ठी हिंदी में अवश्य हो ।

अपने से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएं बनाएं । हालांकि राजभाषा विभाग द्वारा इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना एवं राजीव गाँधी राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजनाएं चलाई जा रही हैं ।

(घ) वरिष्ठ पदाधिकारी द्वारा उदाहरण

यदि वरिष्ठ पदाधिकारी फाइलों पर कम से कम छोटी छोटी टिप्पणियाँ एवं पत्र हिंदी में लिखें तो अधीनस्थ कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी । उल्लेखनीय है कि फोनेटिक का प्रयोग कर, रोमन स्क्रिप्ट के माध्यम से, हिंदी का टंकण अत्यंत आसानी से स्वयं कर सकते हैं ।

(ड) हिंदी आई टी टूल्स का प्रयोग

कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य को सुगम बनाने एवं उसमें एकरूपता लाने के लिए हिंदी का यूनीकोड समर्थित फोंन्ट एवं इन्सिक्रिप्ट की-बोर्ड ही इस्तेमाल करें । राजभाषा विभाग द्वारा विकसित सोफ्टवेयरों यथा ''लीला'', ''मंत्र राजभाषा'', ''श्रुतलेखन राजभाषा'', ''ई-महाशब्दकोश'' आदि की जानकारी एवं अभ्यास हेतु सरकारी कर्मियों को केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संचालित किए जाने वाले ''कंप्यूटर पर हिंदी के आई टी टूल्स प्रशिक्षण कार्यक्रम'' में भेजें ।

(च) नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

संबद्ध/ अधीनस्थ कार्यालय के प्रधान अपने अपने नगर की नराकास के सदस्य बनें तथा इसकी बैठकों में सक्रिय भाग लें ।

(छ) हिंदी के पद

हिदी कार्य के निष्पादन हेतु निर्धारित मानकों के अनुरूप हिंदी पदों का सृजन करें एवं अधीनस्थ/ संबद्ध कार्यालयों में भी राजभाषा संवर्ग बनवाएं ।

(ज) प्रशिक्षण

हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण वर्ष 2015 तक पूरा किया जाना है । अत: सभी पात्र कर्मचारियों का रोस्टर अद्यतन करवाकर उन्हें केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के कार्यक्रमों में प्रशिक्षण हेतु नामित करें एवं भेजें ।

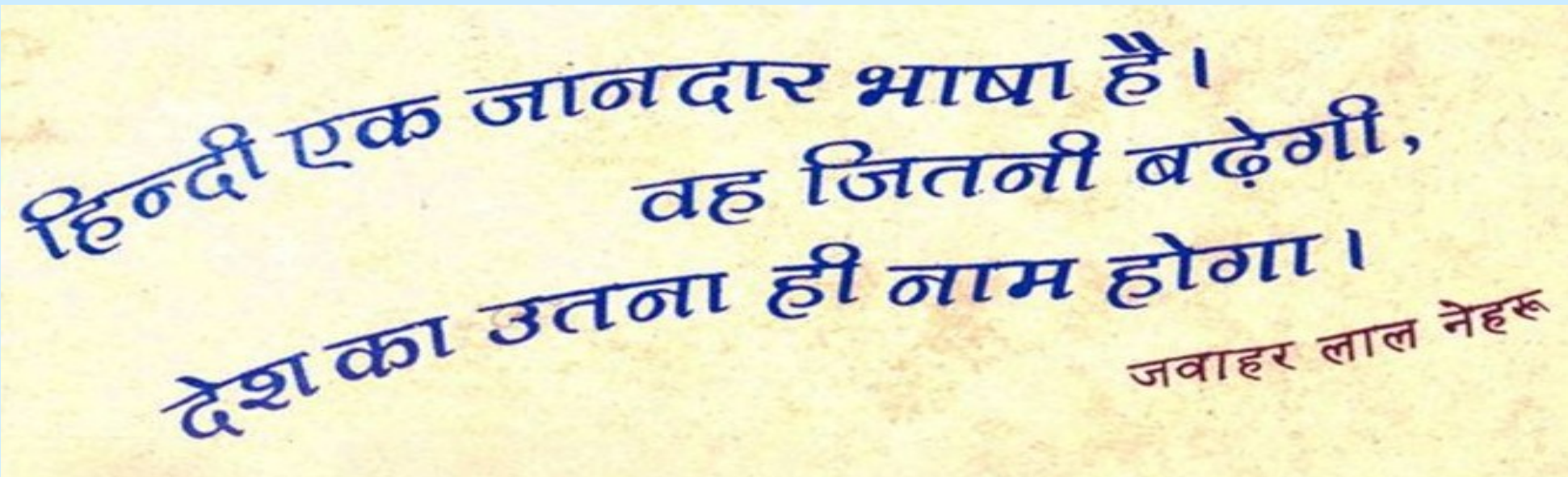

अच्छे दिन बनाम बुरे सपने

प्रधानमंत्री दफ़्तर के बीचो-बीच खड़े हुए थे । उनके पीछे से मानव संसाधन मंत्री महोदया कमर पर हाथ रख कर और भृकुटियाँ तिरछी किए हुए मुझे देख रहीं थीं । चेयरमैन रेलवे बोर्ड और प्रबंध निदेशक की आंखों में मेरे प्रति निराशा झलक रही थी । चारों ओर फाइलें और कागज़ बिखरे हुए थे । अलमारियों के ऊपर गत्ते के बक्से, टूटी फूटी कुर्सियाँ और तरह तरह का सामान गिरने की अवस्था में थे । मैं दौड़कर अपने कमरे में छिप जाना चाहती थी पर मेरे पैर ज़मीन से चिपक गए थे । डिप्टी एफ़ ए और एस ए ओ से कोई उम्मीद करना बेकार था ।

पूरी गलती तो मेरी ही थी । प्रबंध निदेशक ने पिछले हफ्ते ही हम सबको आगाह कर दिया था । उनके निर्देश के फौरन बाद ही एक मेमो भी आ गया था, कुछ यूं इशारा करते हुए कि हालाँकि देश के लिए बेशक अच्छे दिन आ पहुंचे हों पर दफ्तर में दरअसल ये दिन कमर कसने के हैं । जाग उठने के, चारों ओर सफाई करने के, पुराने नियम बदलने के, और नए नियम बनाने के दिन अब सामने आ गए हैं, और यह सब आनन-फानन में करने के दिन भी आ गए हैं । मैंने उस मेमो को पढ़ा तो था और मेरा इरादा भी सफाई करने का था, पर चाय के बेशुमार कपों के बीच समय तेजी से निकल गया था और अब मेरी लापरवाही सबके सामने ज़ाहिर थी ।

सच्चाई यह है कि सफाई का काम शुरू भी हुआ था । पहले ही दिन सौ-पचास बोरे भरकर फाइलें और रजिस्टर गैरजरूरी पाए गए थे । शुक्ला ने तो अपनी पूरी अलमारी ही खाली कर दी थी । ओ एस मेरे कमरे के एक कोने में रखे रैक को फेंकने पर अमादा था । चारों ओर दिल्ली से दौलताबाद का माहौल था । मैने स्थिति पर ब्रेक लगा दिया था, इस आधार पर कि कम से कम फेंकने से पहले फ़ाइल पर एक नज़र तो डाल ली जाए । यही वजह थी कि कई सारे रजिस्टर और कागज़ात चारो ओर रखे हुए थे । शुक्रवार की शाम आ पहुंची थी । मुझे उम्मीद थी कि अगले हफ्ते में सारा काम कायदे से हो जाएगा ।

और अब मामला काबू से बाहर था । सोमवार की सुबह के साढ़े नौ बजे प्रधानमंत्री सशस्त्र और दल - बल सहित हमारे दफ्तर पर हमला बोल चुके थे । और मैं कठघरे में सज़ा के इन्तजार में खड़ी थी । आज किसी को मेरे ऊपर रहम न था । सारे एक्ज़ीक्यूटिव मुझ पर हँसते नज़र आ रहे थे । मुझे जोरों से रोना आ रहा था । घुटन जब बर्दाश्त से बाहर हो गई तो मैं चिल्लाने लगी । और अगले ही क्षण मेरी बेटी के कोमल हाथ मेरे माथे पर थे, '' माँ, क्या बुरा सपना आया था ? ''

- स्मृति वर्मा
वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी

ऑन लाइन आरटीआई आवेदन-प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी तथा कठिनाई मुक्त बनाने का नया तरीका

आरटीआई आवेदन तथा शुल्क भेजने की एक अद्वितीय सुविधा सरकार द्वारा प्रारंभ की गई है ।

1. पोर्टल का पता www.rtionline.gov.in है । यह पोर्टल सभी मंत्रालयों/विभागों के ऑन लाइन आवेदन फाइल करने के लिए है तथा केन्द्र सरकार के जन प्राधिकारियों और अन्य 80 विभागों/मंत्रालयों सहित रेल मंत्रालय को आवेदन इस पोर्टल के माध्यम से दिए जा सकते हैं ।

2. आरटीआई ऑन लाइन आवेदन फाइल करने से पूर्व, यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है, एक साधारण ऑन लाइन प्रक्रिया द्वारा आपको उपयोगकर्ता के रूप में अपना पंजीकरण करके यूजर नेम तथा पासवर्ड प्राप्त कर लेना चाहिए इससे आपको निजी विवरण बार बार भरने से बचने में मदद मिलेगी ।

3. इस पोर्टल का उपयोग करके इंटरनेट बैंकिंग/क्रेडिट कार्ड /डेबिट कार्ड के द्वारा शुल्क रु 10 /- का भुगतान किया जा सकता है । आरटीआई नियम 2012 के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे के किसी भारतीय नागरिक को आरटीआई शुल्क का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है तथा सूचना का अधिकार अधिनियम के अनुसार प्रथम अपील के लिए किसी शुल्क के भुगतान की जरूरत नहीं है । अतिरिक्त भुगतान भी ऑन लाइन किया जा सकता है ।

4. एक से अधिक जन सूचना अधिकारी को अग्रेषित करने पर भी, पोर्टल आरटीआई आवेदन तथा अपील की स्थिति देखने में भी मदद करता है । प्रत्येक अग्रेषित मामले के लिए अलग पंजीकरण क्रमांक जेनेरेट किया जाता है ।

5. निर्धारित शब्द सीमा 3000 अक्षर है । अतिरिक्त हिस्सा अटैचमेंट के रूप में अपलोड किया जा सकता है । वर्तमान में 1 एम बी तक के आकार वाली पीडीएफ फाइल की अनुमति है । आप एक से अधिक फाइलें अपलोड कर सकते हैं

6. एसएमएस एलर्ट्स पंजीकरण के समय दिए गए मोबाइल नंबर पर दिया जाता है ।

7. राज्यो से संबंधित आरटीआई सूचना इस पोर्टल (www.rtionline.gov.in) पर शामिल नहीं हैं । तथापि महाराष्ट्र (sic.maharashtra.gov.in) सहित बहुत से राज्यों के अलग ऑन लाइन आरटीआई आवेदन पोर्टल हैं । राज्यवार वेबसाइटों की सूचना तथा उनके आरटीआई लिंक rti.gov.in/states.asp पर उपलब्ध है ।

8. राज्यों की आरटीआई सूचना के लिए जहाँ आरटीआई ऑन लाइन सुविधा उपलब्ध नहीं है, सूचना शुल्क के लिए पोस्टल आर्डर ऑन लाइन खरीदा जा सकता है । ऑन लाइन वेबसाइट का पता (www.epostoffice.gov.in) है ।

9. बहुत से अन्य ऑन लाइन निजी पोर्टल जैसे (onlinerti.com अथवा rtination.com) रु 75/- से रु 150/- तक के मामूली शुल्क पर भारतीय नागरिकों की ओर से आरटीआई आवेदनों के प्रारूप तैयार करते हैं।

- कुलदीप कुमार जैन
मुख्य जन सूचना अधिकारी

एम.आर.वी.सी. स्वास्थ्य शिविर

"स्वास्थ्य ही धन है" l बीमार व्यक्ति धन एवं सुख-सुविधाओं का उपभोग नहीं कर सकता, उसे अपना जीवन भार लगने लगता है l स्वस्थ व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में उमंग और प्रसन्नता छाई रहती है और जिस कार्य को वह करता है, पूरे उत्साह से करता है l इसी लिए कहा गया है की स्वास्थ्य ही धन है l

अपने कर्मचारियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रयत्न करना संगठन का दायित्व है. इसी दायित्व को निभाते हुए अध्यक्ष महोदय के दिशा-निर्देश में एमआरवीसी में दिनांक 11 जून 2014 को कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए सीपीएए के सहयोग से "स्वास्थ्य शिविर" का आयोजन किया गया l इस शिबिर में 95% कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया l सीपीएए के डाक्टरों एवं टीम द्वारा कर्मचारियों की विभिन्न चिकित्सा-जांच की गई जैसे की रक्तचाप, रक्त में शर्करा की मात्रा ईएनटी इत्यादि. सीपीएए की कार्यकारिणी निदेशक, डॉक्टर नीता मोरे ने सभी कर्मचारियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देकर एवं काउंसलिंग कर लाभान्वित किया l यह शिविर अत्यंत सफल एवं लाभदायी रहा और सभी कर्मचारियों द्वारा इसकी सराहना की गई l

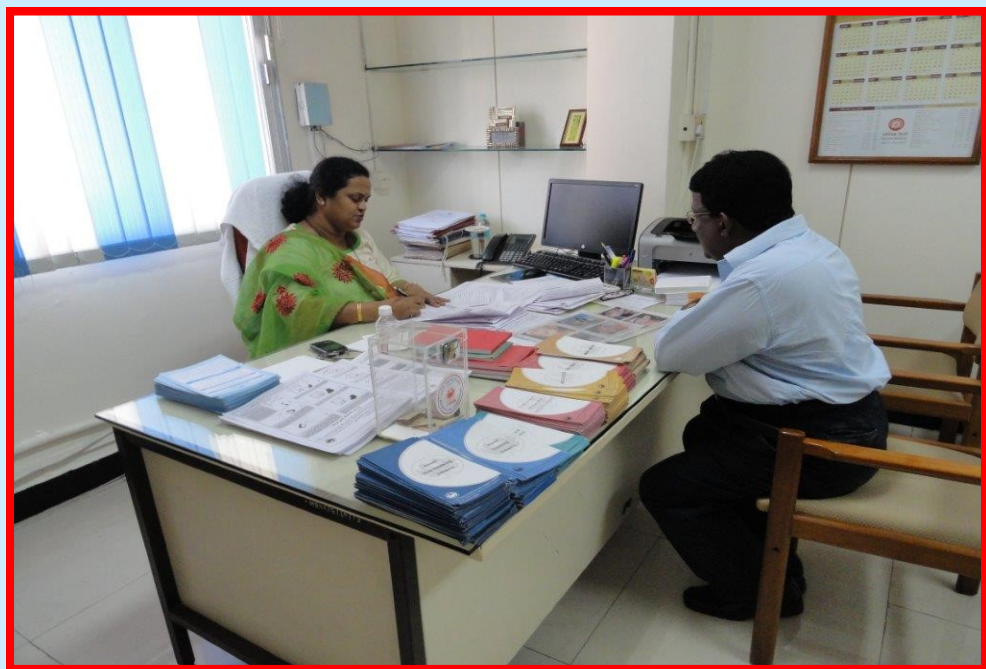

- स्मृति जेकब
वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी

कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व संपोषणीयता (सीएसआर व एस)

पब्लिक इंटरप्राइजेज़ विभाग द्वारा दिनांक 24 अप्रैल 2013 के दिशानिर्देशों के आधार पर मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन ने अपनी वास्तविक आय (नेट प्रोफिट)का 3% हिस्सा कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व संपोषणीयता (सीएसआर व एस) के लिए खर्च करने का निर्णय लिया जिसके तहत एमआरवीसी ने ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र'' में ''नागरिकों के स्वास्थ्य संबंधी उत्थान'' को चुना एवं इसके अंतर्गत एमआरवीसी ने ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र'' के नटवर पारिख कंपाउंड, गोवंडी एवं लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द में दो स्वास्थ्य इकाइयों की

स्थापना की । शुरुवात में एमआरवीसी ने गैर सरकारी संगठन ''डॉक्टर्स फॉर यू'' के साथ संपर्क कर एक कक्ष से लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द में स्वास्थ्य इकाई की स्थापना की जो कि वहाँ की लोकप्रियता को देखते हुए यानी मरीजों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए एक ओपीडी अस्पताल में तब्दील हो गया ।

इस ओपीडी अस्पताल का उदघाटन एमआरवीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय श्री राकेश सक्सेना द्वारा दिनांक 11-11-2013 को किया गया ।

इस एमआरवीसी लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द में निम्नलिखित सुविधाएं ''डॉक्टर्स फॉर यू'' के सहयोग से उपलब्ध कराई गई हैं :-

1. शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के लिए फिजिओथेरेपी
2. सामान्य ओपीडी

3. टीकाकरण सुविधा
4. दाँत का दवाखाना
5. महिलाओं हेतु गायनिक डॉक्टर की सुविधा
6. पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए विशेष ओपीडी
7. नेत्र चिकित्सा
8. टी बी व डाट्स मरीजों का ओपीडी
9. फॉर्मेसी सुविधा
10. पैथोलोजी सुविधा

लल्लूभाई कंपाउंड स्थित इस स्वास्थ्य इकाई का प्रतिदिन लगभग 100-120 मरीज लाभ उठाते हैं ।

इसके अतिरिक्त एमआरवीसी द्वारा ''डॉक्टर्स फॉर यू'' के सहयोग से नटवर पारिख कंपाउंड में भी ओपीडी स्वास्थ्य इकाई का संचालन किया जा रहा है । इस इकाई पर भी वह सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं जो कि लल्लूभाई कंपाउंड स्थित स्वास्थ्य इकाई पर हैं ।

एमआरवीसी द्वारा समय समय पर ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र'' में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता है ।

1. शारीरिक व मानसिक रूप से अशक्त लोगों के लिए एमआरवीसी द्वारा 12 अगस्त 2013 को डॉ नीरज झा, एमपीडी (न्यूरो) की सहायता से '' ओर्थोपेडिक शिविर '' का आयोजन किया गया । जिसके दौरान अस्थिर रूप से अशक्त लोगों को फिजियोथेरेपी चिकित्सा उपलब्ध करायी गयी । जिसके लिए एमआरवीसी हेल्थ सेंटर, लल्लूभाई कंपाउंड के 2 कक्ष में इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए विशेष उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं, जिनमें डॉक्टर्स की देखरेख में मरीजों का आवश्यक इलाज किया जाता है । इस शिविर के दौरान 10 ऐसे मरीज जो कि स्थिर रूप से शारीरिक अशक्त थे, उन्हें कृत्रिम अंग (आर्टिफिसियल लिंब) प्रदान किया जाना तय किया गया एवं एलिमको कंपनी से ये कृत्रिम अंग खरीद कर दिनांक 26 अक्टूबर 2013 को मरीजों में वितरित किए गए । इन मरीजों में एक 6 वर्ष का बच्चा भी था जो उसी दिन यानी दिनांक 26 अक्टूबर 2013 को पहली बार कृत्रिम अंग की सहायता से अपने पैरों पर खड़ा हुआ ।

2. नेत्र जॉच शिविर - दिनांक 26 जनवरी 2014 को '' पुनर्वास व पुनर्स्थापन '' क्षेत्र के लोगों के लिए एमआरवीसी द्वारा स्वास्थ्य इकाई, लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द पर एक नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर का उदघाटन एमआरवीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री राकेश सक्सेना द्वारा किया गया इस शिविर का लाभ लगभग 110 लोगों ने उठाया । निदेशक (परियोजना), मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं अन्य अधिकारी भी इस आयोजन के साक्षी बने । आवश्यकतानुसार मरीजों को कम कीमत पर चश्मे उपलब्ध कराए गए एवं 8 कैटरेक के मरीजों को कम कीमत में उपलब्ध ऑपरेशन हेतु संबंधित अस्पताल में जाने का आग्रह किया गया ।

3. नवचेतना शिविर – दिनांक 28 अप्रैल 2014 से 30 अप्रैल 2014 तक एमआरवीसी हेल्थ सेंटर लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द पर ''आर्ट ऑफ लिविंग'' के सदस्यों के सहयोग से ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र की महिलाओं के शारीरिक व मानसिक विकास हेतु ''नवचेतना शिविर'' का आयोजन किया गया । यह शिविर 2 घंटे प्रतिदिन आयोजित किया गया जिसमें लगभग 25 महिलाओं ने भाग लिया । इस शिविर में महिलाओं को ध्यान लगाना व हल्के फुल्के व्यायाम करना सिखाया गया ताकि वे तन व मन से पूर्ण स्वस्थ रह कर अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकें ।

इसके अतिरिक्त एमआरवीसी ने , सीएसआर व एस योजनाओं के तहत ''डॉक्टर्स फॉर यू'' के सहयोग से पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र के युवाओं व बच्चों को तंबाकू के सेवन से होने वाले दुष्परिणाम के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाया । 6 माह से 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र में ''अतिरिक्त न्यूट्रिशन योजना'' आयोजित की गई, जिसमें अंबेडकर नगर व लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द, एवं नटवर पारिख कंपाउंड, गोवंडी आदि क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया ।

गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उपलब्ध करायी जाती है ताकि न केवल वे स्वयं स्वस्थ रहें बल्कि स्वस्थ शिशु को जन्म दे सकें । ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' के युवाओं में ''छोटा परिवार सुखी परिवार'' की विचारधारा को अपनाने हेतु जागरूक किया जाता है ।

युवाओं एवं बच्चों को स्वच्छता/शारीरिक स्वच्छता के बारे में जागरूक किया जाता है, ताकि वे न केवल स्वयं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें अपितु अपने आस-पास के वातावरण को भी स्वस्थ रख कर एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकें ।

आज के युग में बेरोजगारी एक सबसे बड़ी समस्या है । विशेषकर ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्रों में जहाँ के युवाओं, महिलाओं में शैक्षणिक क्षमता के साथ साथ कौशल क्षमता (स्किल डेवलपमेंट) का भी अभाव है । इसी बात को ध्यान में रखते हुए, एमआरवीसी ने महाराष्ट्र उद्योग विकास संस्थान (मिडी) के सहयोग से अंबेडकर नगर व लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द एवं नटवर पारिख कंपाउंड, गोवंडी में एक सर्वे करवाया । मिडी ने लगभग 585 लोगों से संपर्क स्थापित किया और एमआरवीसी को यह जानकारी उपलब्ध कराई कि इन क्षेत्रों के लोग ज्यादातर या तो ड्राइवर हैं या दिहाड़ी मजदूर हैं ।

इन क्षेत्रों के युवाओं व महिलाओं की कौशल क्षमता बढ़ाने के लिए अपनी रुचि सिलाई कढ़ाई, ब्यूटी पार्लर कोर्स, ड्राइविंग, कंप्यूटर स्किल एवं मोटर मैकेनिक इत्यादि में दिखाई ।

एमआरवीसी इसी के तहत ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र अंबेडकर नगर, नटवर पारिख कंपाउंड व लल्लूभाई कंपाउंड की महिलाओं एवं युवतियों के लिए सर्वप्रथम ''मिडी'' के सहयोग से सिलाई का कोर्स प्रारंभ करने जा रही है ।

एमआरवीसी का यही उद्देश्य है कि प्रति वर्ष कम से कम 100 से 120 युवाओं/महिलाओं/युवतियों की कौशल क्षमता को बढ़ाया जाए ताकि ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र के लोगों का आर्थिक व सामाजिक विकास हो सके ।

''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र में उत्थान के लिए न केवल आर्थिक विकास की आवश्यकता है, अपितु उनके सामाजिक व मानसिक विकास की भी आवश्यकता है । इन क्षेत्रों के नागरिकों को अभी भी अपनी मूल सुविधाओं/मूलअधिकारों के प्रति जागरूकता नहीं है ।

एमआरवीसी अपने पूर्ण सामर्थ्य के साथ ''पुनर्वास व पुनर्स्थापन'' क्षेत्र के नागरिकों को आर्थिक, सामाजिक व मानसिक उत्थान हेतु प्रयासरत है ।

अनुपम शर्मा
कर्मचारी व कल्याण निरीक्षक

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उपयोगी सुझाव

प्रत्येक सरकारी कार्यालय और उपक्रमों में राजभाषा संबंधी नीतियों के सफल कार्यान्वयन के लिए विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं । प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है जो हिंदी के प्रयोग की समीक्षा करती है तथा समय समय पर राजभाषा विभाग से प्राप्त आदेशों और नियमों आदि की जानकारी देती है ।

हिंदी में काम काज को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए :-

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) से संबंधित सभी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं ।
2. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों / कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए व्यक्तिश: आदेश दिए जाएं ।
3. हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में देना अनिवार्य है चाहे वह कहीं से भी प्राप्त हुआ हो ।
4. जिन पत्रों पर हस्ताक्षर हिंदी में हों उन्हें हिंदी पत्र मान कर उनका उत्तर हिंदी में दिया जा सकता है ।
5. सभी कर्मचारियों को प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी जाए ।
6. समय समय पर हिंदी कार्यशालाएं चलाई जाएं जिनमें कर्मचारियों को उनके दैनिक कार्यालयीन कार्य का अभ्यास कराया जाए ।
7. ''क'' तथा ''ख'' क्षेत्र के अंग्रेजी पत्रों के उत्तर भी हिंदी में दिए जाएं ।
8. सभी टंककों और आशुलिपिकों को क्रमश: हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का सेवाकालीन प्रशिक्षण दिलाया जाए ।
9. जिन कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाए उनकी सेवाओं का उपयोग किया जाए ताकि उनको कार्य का अभ्यास बना रहे ।
10. अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने का अभ्यास कराने के लिए डिक्टेशन कार्यशाला चलाई जाए।

- श्रीमती मेघना दत्ता
प्रबंधक मानव संसाधन

एमआरवीसी में कर्मचारी हेल्पलाइन

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने एमआरवीसी में कर्मचारी हेल्पलाइन का शुभारंभ किया।
- हेल्पलाइन ई-मेल आई डी cpomrvc@gmail.com है ।
- उपर्युक्त ई मेल पते पर अपने मामले भेजने हेतु सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों (सभी कोटियों/पदनामों) का स्वागत है ।
- हम उसी दिन उत्तर देने का प्रयास करेंगे ।
- यदि मामला अन्य विभागाध्यक्ष से संबंधित है, तो कार्मिक विभाग मामले को संबंधित विभागाध्यक्ष को अग्रेषित करेगा एवं उनसे आग्रह करेगा, कि वे ई-मेल द्वारा पार्टी को सीधा उत्तर प्रेषित करें एवं उत्तर की प्रति मुख्य कार्मिक अधिकारी को भेजें ।
- मामलों को तत्परतापूर्वक निबटाने, सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करने तथा संगठनात्मक क्षमता बढ़ाने का हम प्रयास करेंगे ।

बहु खंड डिजिटल धुरा गणक (मे फ्रौशर द्वारा निर्मित)
के प्रशिक्षण एवं परीक्षण केंद्र का उद्घाटन

बहु खंड डिजिटल धुरा गणक (में. फ्रौशर द्वारा निर्मित) के प्रशिक्षण एवं परीक्षण केंद्र का उद्घाटन श्री. एस. के. सूद महाप्रबंधक, मध्य रेल, के कर कमलों द्वारा दिनांक 03 जून 2014 को संपन्न हुआ।

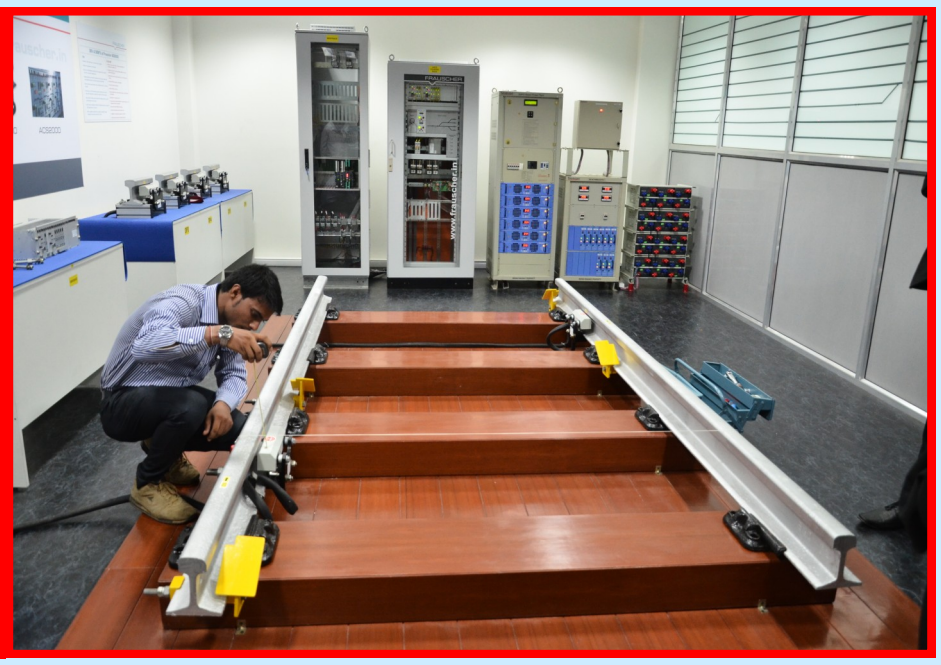

यह एमएसडीएसी - मल्टी सेक्सन डिजिटल एक्सल काउंटर के लिए स्टेट ऑफ आर्ट ट्रेनिंग सेंटर है, तथा यह अपनी तरह का पहला है जो कि तकनीकी व्यक्तियों को प्रणाली का अनुरक्षण करना सिखाएगा । एमएसडीएसी ट्रेक सर्किट का एक प्रकार है जो रेलपथ के पानी में डूबने पर बाढ़ की स्थिति में भी असफल नहीं होता तथा मानसून के समय भी उसी प्रकार कार्य करता है जैसा कि सामान्य समय में ।

ओम प्रकाश नेभनानी
मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर

मध्य रेल के ठाणे-दिवा स्टेशनों के बीच पांचवी एवं छठी नई रेलवे लाइन का निर्माण

एमयूटीपी ॥ के अंतर्गत मध्य रेल में ठाणे और दिवा स्टेशनों के बीच दो अतिरिक्त नई रेलवे लाइनों का निर्माण किया जा रहा है | इन दो लाइनों के पूरा हो जाने के बाद कुर्ला और कल्याण के बीच तेज लोकल ट्रेन और लंबी दूरी जाने वाली मेल/एक्सप्रेस यात्री ट्रेन, माल गाड़ी ट्रेनों को अलग अलग सफलता पूर्वक संचालित किया जा सकेगा|

इस परियोजना मे ठाणे खाड़ी के ऊपर दो बड़े पुल, मुंब्रा खाड़ी के ऊपर एक बड़ा पुल, 31 छोटे पुल, कलवा मुंब्रा के बीच 165 मीटर लंबी सुरंग, मुंब्रा के पास सड़क ऊपरी पुल , विटावा के पास सड़क अधोमार्गी पुल, तीन रेलवे स्टेशनों पर 6 पैदल ऊपरी पुल तथा नये प्लॅटफॉर्म एवं सर्विस इमारत का निर्माण किया जा रहा है |

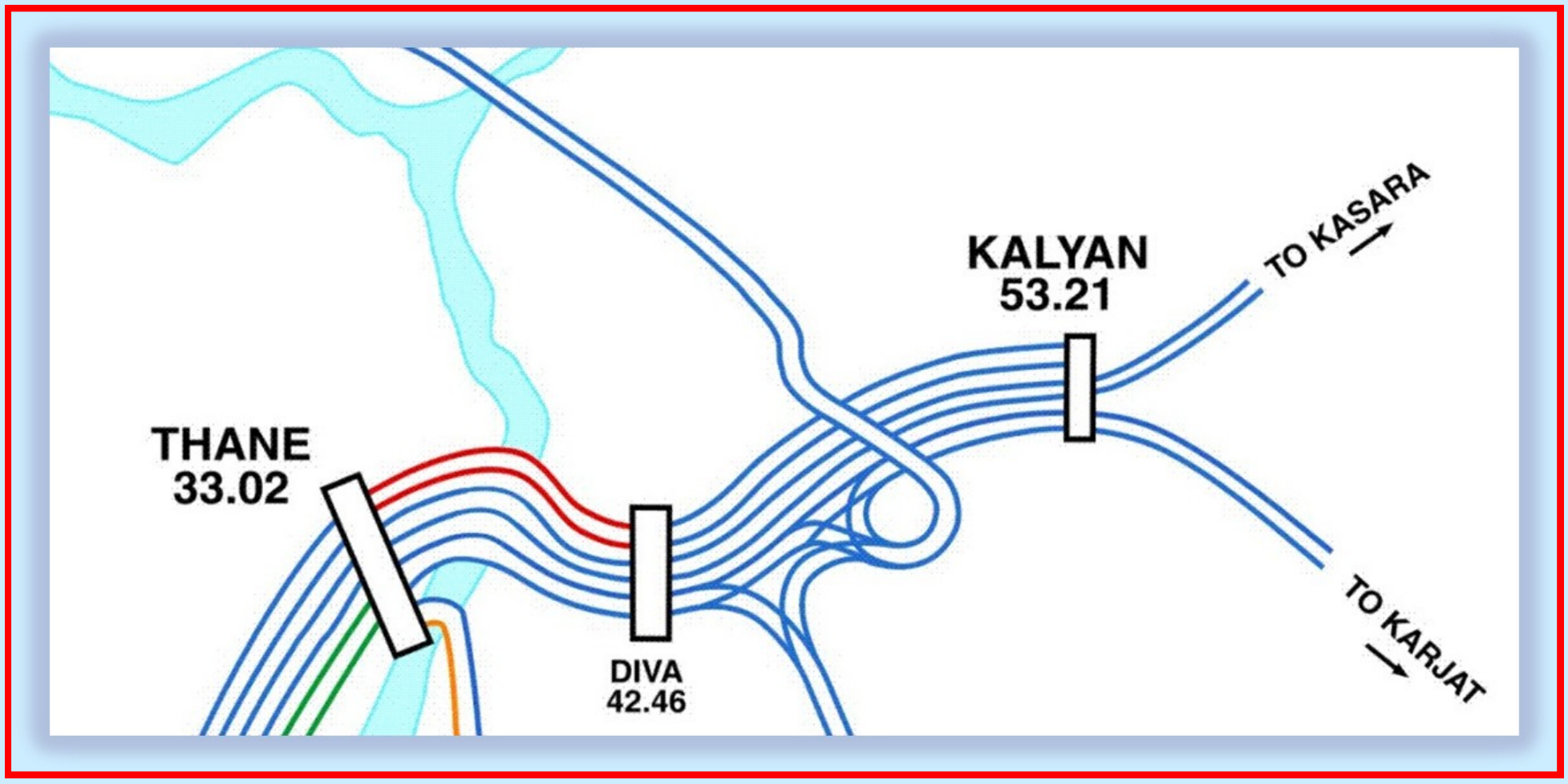

मुंब्रा और दिवा के बीच सुरंग का कार्य लगभग पूरा हो गया है |

आर आर आई बिल्डिंग, दिवा का 90 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है |
पी आई बिल्डिंग कलवा का कार्य प्रगति पर है |

टिकट घर 5 खिड़कियाँ, कलवा

मुंब्रा दिवा के बीच रेल पथ का कार्य

सड़क ऊपरी पुल, मुंब्रा का कार्य तेज गति से प्रगति में है | लगभग 50 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है |

मुंब्रा खाड़ी के ऊपर स्टील गर्डर की

विटावा सड़क अधोमार्गी पुल

ठाणे - दिवा स्टेशन के बीच मिट्टी बिछाने का कार्य

मुंब्रा खाड़ी के ऊपर स्टील गर्डर की लाँचिंग

दिनांक 5 और 6 जून, 2014 को मध्य रेलवे के मेजर पुल नं. 40/1 के पास मुंब्रा खाड़ी के ऊपर 76.2 मी. लंबा स्टील गर्डर लाँच किया गया | मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड के इतिहास में इतना लंबा स्टील गर्डर पहली बार लाँच किया गया | गर्डर का वजन 350 टन था | स्टील गर्डर टुकड़े टुकड़े में सड़क मार्ग द्वारा साइट पर लाया गया, उसके उपरांत गर्डर को साइट पर जोड़ा गया तथा पेंटिंग की गयी | गर्डर को लाँच करने के लिए निदेशक परियोजना के साथ सघन योजना की गयी जिससे इस कार्य को दो दिन में पूरा किया जा सका |

ठाणे खाड़ी के ऊपर पुल का कार्य |

ठाणे - दिवा स्टेशन के बीच मिट्टी बिछाने का कार्य

मुंब्रा सड़क ऊपरी पुल से दिवा के बीच

राजीव वर्मा
उप. मुख्य इंजिनीअर

मुंबई के उपनगरीय स्टेशनों पर अतिक्रमण नियंत्रण

पृष्ठभूमि

मुंबई उपनगर में अतिक्रमण के कारण बड़ी संख्या में यात्रियों/जनता की मृत्यु को ध्यान में रखते हुए, एमआरवीसी द्वारा सर जे जे कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर मुंबई के माध्यम से वर्ड बैंक निधि का उपयोग करते हुए अत्यधिक अलोचनात्मक स्टेशनों का पता लगाने और अतिक्रमण नियंत्रण के लिए हस्तक्षेप/निवारात्मक उपायों का सुझाव देने हेतु एक अध्ययन किया गया ।

सर जे जे कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर मुंबई ने मध्य तथा पश्चिम रेलों, प्रत्येक पर 6, कुल 12 निम्नलिखित अति आलोचनात्मक स्टेशनो की पहचान की । ये इस प्रकार हैं :-

मध्य रेल	पश्चिम रेल
1 . दादर	1 . दादर
2 . कुर्ला	2 . कांदिवली
3 . कांजुर मार्ग	3 . बोरीवली
4 . ठाणे	4 . भायंदर
5 . ठाकुर्ली	5 . वसई रोड
6 . कल्याण	6 . नालासोपारा

सर जे जे कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर ने इन स्टेशनों पर अतिक्रमण नियंत्रण के लिए निम्नलिखित प्रमुख हस्तक्षेप के सुझाव दिए :-

- अतिरिक्त पैदल ऊपरी पुलों की व्यवस्था, वर्तमान पैदल ऊपरी पुलों का विस्तार/चौड़ा करना । पैदल ऊपरी पुलों को आपस में जोड़ना । स्टेशन के प्रवेश/निकास पर हाई वाक्स उपलब्ध कराना ।
- अतिरिक्त प्लेटफार्म की व्यवस्था/प्लेटफार्म का विस्तार, स्वचलित सीढ़ियों/एलीवेटर्स की व्यवस्था कंपाउंड वाल/फेनसिंग की व्यवस्था, ट्रैक बेरीकेटिंग बनाना ग्रीन पैचेस की व्यवस्था । सर जे जे कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर की रिपोर्ट मंडलों सहित संबंधित रेलों, साथ ही साथ जीओएम और वर्ड बैंक को भेजी गई ।
- 12 स्टेशनों पर इन अतिक्रमण नियंत्रण उपायों को करने के लिए यूएसडी 30 मिलियन पर (एमयूटीपी 2 ए के अंतर्गत) सिफारिशों को स्वीकृत और अनुमोदित किया गया । इन स्टेशनों की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, कार्य को 2-3 स्टेशन प्रत्येक के 5 समूहों में विभाजित किया गया ।

- सभी स्टेशनों के लिए ठेकों का मार्च 2014 में अंतिम निबटान किया गया तथा आने वाले मानसून सत्र को ध्यान में रखते हुए 6 स्टेशनों अर्थात नालासोपारा, वसई, बोरीवली तथा कांदीवली पश्चिम रेल पर और कांजुरमार्ग, कुर्ला मध्य रेल पर (12 स्टेशनों में से कुल 6) पर कार्य प्रारंभ हो गया है ।

विलास वाडेकर
मुख्य परियोजना प्रबंधक ।।

डीसी-एसी परिवर्तन कार्य एमयूटीपी II

एमआरवीसी द्वारा मध्य रेल पर डीसी-एसी परिवर्तन कार्य एमयूटीपी II के अंतर्गत किया जा रहा है ।

इस कार्य में चिंचपोकली तथा शीव में दो कर्षण उप स्टेशनों तथा मुंबई छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, सैंडहर्स्ट रोड, परेल, माटुंगा और विद्याविहार में 5 स्विचिंग पोस्ट्स का लगाना तथा प्रारंभ करना शामिल है ।

डीसी-एसी परिवर्तन कार्य से मध्य रेल पर बहुत से लाभ होंगे । जो संक्षेप में नीचे दिए गए हैं ।

- ऊर्जा बचत
- उपनगरीय गाड़ियों के यात्रा समय में बचत
- कर्षण उप स्टेशनो की संख्या में कमी
- कर्षण में परिवर्तन होने से लोको बदलने से बचना
- एसी कर्षण का अनुरक्षण, डीसी कर्षण की तुलना में बहुत कम तथा अधिक किफायती है ।
- तीव्रतर, उत्कृष्ट तथा लंबी दूरी की गाड़ियाँ प्रारंभ की जा सकेंगी
- उच्च दक्षता तथा प्रभावी त्रुटि स्थानीकरण

गोपाल चंद्रा
मुख्य विदयुत इंजीनिअर ।

नए उन्नत बुकिंग कार्यालय का निर्माण

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन **द्वारा** जोगेश्वरी स्थानक के उत्तर **की ओर** नए उन्नत बुकिंग कार्यालय का निर्माण किया गया हैं, जो पश्चिम रेलवे **द्वारा** 15 जून 2014 को **प्रारंभ** कर दिया गया हैं।

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन **द्वारा** अंधेरी स्थानक के पश्चिम **की ओर** बुकिंग कार्यालय तथा दो स्वयंचलित सीढियों का निर्माण किया गया हैं, जो पश्चिम रेलवे व्दारा 16 जून 2014 को **प्रारंभ** कर दिया गया हैं।

जोगेश्वरी उन्नत टिकटघर (दक्षिण की ओर) बाहर

जोगेश्वरी उन्नत टिकटघर (दक्षिण की ओर) - अंदर

जोगेश्वरी उन्नत टिकटघर (दक्षिण की ओर)

जोगेश्वरी उन्नत टिकटघर (उत्तर की ओर)

जोगेश्वरी उन्नत टिकटघर (उत्तर की ओर)

उन्नत टिकटघर अंधेरी - अंदर

उन्नत अंधेरी रास्ता

उन्नत टिकटघर अंधेरी

अंधेरी उन्नत टिकटघर आहाता

अंधेरी पश्चिम की ओर एलीवेटर तथा सीढ़ियाँ

अंधेरी पश्चिम की ओर एलीवेटर

अंधेरी पश्चिम की ओर निकास सीढ़ियाँ

प्रभात रंजन
मुख्य परिचालन प्रबंधक

यात्री सुख-सुविधा मदें

1. पहली बार अपनी तरह का स्टेनलेस स्टील कोच डिजाइन किया गया जिसमें स्टेनलेस स्टील स्ट्रेटसाइडवाल तथा छत के लिए स्टेनलेस स्टील फ्लूटेड पैनल लगाया गया है ।
2. बेहतर सौंदर्यपरक तथा ऊर्जा संरक्षण के लिए ड्राइविंग कैब की वायुगतिक रूपरेखा
3. एनआईडी, अहमदाबाद द्वारा डिजाइन की गई, बेहतर सौंदर्यपरक मानकों सहित बाहरी रंग योजना तथा सायनेज ।
4. बेहतर प्रकाश तथा अलंकरण के लिए दोनो ओर लाइट फिटिंग सहित सेंट्रल डक्ट !
5. साइड वाल, एंड वाल तथा छत के लिए एल्यूमिनियम कम्पोजिट इंटीरियर पैनल लगाना ।
6. यात्रियों के आराम में वृद्धि के लिए रूफ माउंटेड फोर्स्ड वेंटीलेशन प्रणाली लगाना जो 16000 क्यूबिक मीटर प्रति घंटे वायु की आपूर्ति करेगी ।
7. ऑन बोर्ड यात्री सूचना तथा बेहतर दृश्यता के लिए दोनो ओर डिस्प्ले वाली यात्री सूचना प्रणाली
8. श्रमदक्षता शास्त्र के अनुसार रूपरेखा वाली स्टेनलेस स्टील फ्रेम सहित पीयू फोम कुशन्ड प्रथम श्रेणी सीटें ।
9. श्रमदक्षता शास्त्र के अनुसार रूपरेखा वाली स्टेनलेस स्टील फ्रेम सहित इंजेक्शन मोल्डेड पोलीकार्बोनेट द्वितीय श्रेणी सीटें ।

10.डोरवे तथा कंपार्टमेंट पार्टीशन्स पर हनीकोम्ब पैनलिंग सहित स्टेनलेस स्टील ट्यूबलर फ्रेम संरचना ।

11. पकड़ने में आसान पोलीकार्बोनेट वाले स्टेनलेस स्टील हैंडल्स ।

12. उपयोग में सुविधाजनक उन्नत रूपरेखा वाले स्टेनलेस स्टील के लगेज रेक्स ।

13. विशालदर्शी दृश्य के लिए पोलीकार्बोनेट लोवर्स सहित चौडी खिड़कियाँ ।

नई तकनीक वाली गाड़ियों की प्रमुख विशेषताएं

1. 'स्टेट आफ द आर्ट' 3-चरण 'आईजीबीटी आधारित', उन्नत ऊर्जा दक्ष तथा विश्वसनीयता सहित दोहरी वोल्टेज कर्षण तकनीक । कर्षण उपस्करों की आपूर्ति मेसर्स सीमेन्स ए जी जर्मनी तथा मेसर्स सीमेन्स लिमिटेड इंडिया द्वारा ।

2. अनुरक्षण रहित, उच्चतर हॉर्स पावर (30%) 3 - चरण एसी कर्षण मोटर्स, वोल्टेज घटबढ़, फ्रीक्वेंसी घटबढ़ (वीवीवीएफ) नियंत्रण सहित ।

3. जीपीएस आधारित माइक्रोप्रोसेसर नियंत्रित "" यात्री सूचना प्रणाली '' ।

4. क्रमश: 0.54 एम/एस/एस तथा 0.76 एम/एस/एस उच्चतर गतिवर्द्धन तथा अवमन्दन तथा अधिकतम गति 100 कि मी प्रति घंटा ।

5. वातावरण सुविधाजनक विशेषताएं - रीजेनेरेशन - लोअर नोइस लेवल के कारण 30% उर्जा बचत ।

6. अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार 700 पीपीएम के अंदर डिब्बे के अंदर और बाहर के बीच सीओ2 स्तर मे अंतर बनाए रखने हेतु फोर्स्ड एयर वेंटीलेशन प्रणाली ।

7. बेहतर सवारी गुणवत्ता के लिए सेकेन्डरी सस्पेंशन में एयर स्प्रिंग

8. विशेषत: चर्चगेट-बोरीवली अथवा मुंबई सीएसटी-ठाणे खंड में लगभग 4 से 5 मिनट के यात्रा समय में कमी ।

9. 300 एलयूएक्स पर उन्नत प्रकाश ।

10 एलईडी डिस्प्ले सहित कंप्यूटरीकृत यात्री सूचना प्रणाली।

अनप कुमार अग्रवाल
उप. मुख्य विदयुत इंजिनीअर ।।

अश्वत्थामा

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था. कौरवों की ओर से केवल तीन महारथी हीं जीवित बचे थे - अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा. पिता की हत्या के प्रतिशोध में क्रोधांध अश्वत्थामा छल से पांडव पुत्रों का सिर काट लेता है। इस निर्दयता और अमानुषिकता के दंड स्वरुप अश्वत्थामा मस्तक की मणि निकालकर उसे आजीवन भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है। संस्कृत में एक सूक्ति अनुसार सप्त चिरंजीवों मे एक अश्वत्थामा हैं।

"अश्वत्थामा ...चिरजीवि:!"

युगांतर में कई महर्षि, राजा,योद्धा अमरत्व का आशीर्वाद लेकर जिये । चिरंजीवियों की अमरता पर कोई प्रश्नचिन्ह नही है, परन्तु मूल्य हीनता और नृशंसता का पर्याय अश्वत्थामा किस गुण धर्म के कारण अमर हैं, यह विचारणीय और चिन्तनीय है। जो समाज में नितांत निदंनीय है वह चिरंजीव कैसे हो गया। कहते हैं, अश्वत्थामा आज भी रुप बदल-बदल कर , भ्रष्टता और विवेकहीनता का प्रतीक बनकर अनवरत भटक रहा है। वो मरा नही है।

युग परिवर्तन के साथ अश्वत्थामा के स्वरुप मे भी परिवर्तन होने लगा है अश्वत्थामा भी अब श्वेत टोपी पहने, टाई बांधे, आरोपों के घाव लिये बेफिक्र " मणि" की तलाश में धूम रहा है। वह कुर्सी पर विराजमान होकर फिर हुंकार भरता है, अब सिर्फ मैं ही चिरंजीवी नही, "आयोगों" को भी अमरत्व प्राप्त है।

जांच जारी है... अनंत तक

हे अमरत्व को शापित करने वाले अश्वत्थामा बताया जाए, किन किन दुर्योधनों ने काले धन से टेंडर हड़पे, बोलो कब किस- निर्दोष धर्मराज का गला घोंटा। जवाब दो तेरी मष्तक मणि को किस बैंक में कहां छुपाया गया है। विदित है तू, ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता है टेंडर पास कराने में, रक्षा सौदों की दलाली, प्रमोशन और मनचाहा स्थानांतर पाने के लिये। ज्ञात है,तू नगदनारायणास्त्र धारण करता है जिसका तोड़ किसी के पास नहीं है। गांधारी की पट्टी आंखों पर बांध कर कानून अंधा बना बैठा है, बदलते युग में आयोग अमर हैं, और तारीखें कभी मरती नही। तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख पडती रहती है फैसलों पर कभी निर्णय नहीं आते, फिर घोटाले समय की गर्त में कहीं खो जाते हैं। मीडिया का भोंकना भी अचानक क्यों मौन धारण कर लेता है, पता ही नही चलता। संभवत: एकलव्य के बाणों की तरह मुद्राबांण से श्वान का मुंह भर दिया जाता हो। हमारी याददाश्त की उम्र भी बहुत छोटी है, बहुत जल्दी भूल जाते है फिर व्यस्त हो जाते हैं अपने अपने नफ़े- नुकसान की जुगत में, इस बात से अनभिज्ञ कि अश्वत्थामा अभी मरा नहीं है, ईमानदार कई अभिमन्युओं को चक्रव्युह में फंसा कर वध किये जा रहा है।

हस्तिनापुर में विराजित भीष्मपितामह, आचार्यदोण, कृपाचार्य राजधर्म की डोर से बंधे हैं और गठबंधन का राग अलाप कर सिंहासन सम्भाल रहे हैं। नगदनारायणास्त्र का प्रयोग ज़ोरों पर है, प्रजा में हाहाकार मचा हुआ है, नेता - अभिनेता ,खेल-खिलाडी,साधु-संत, अधिकारी-दंडाधिकारी या औद्यौगिक घराने, कोयले की दलाली में सभी के हाथ काले दिखायी देते हैं। जांच धनुर्धर भी गाण्डीव उठाने के लिये स्वतंत्र नही हैं,उन्हें भी अनुमति व दिशानिर्देशन की आवश्यक्ता होती है। ये विचित्र महा भारत है यहां धर्मराज युधिष्ठिर भी दुर्योधन से धनाभिषेक करा रहे हैं। धर्म – अधर्म के इस महाभारत में कौरव या पाण्डव में किस की जीत होगी यह तो स्पष्ठ नही है पर यह स्पष्ट है कि हार "भारत" की ही होगी हे, युद्धिष्ठिर तुमने तो सत्य ही बोला था,किन्तु तुम्हारे ही साथी थे धनुर्धर, जिन्होने गुंजाया था शंख स्वर, तब तुमने कहा था "....." या कुंजर। हे युध्दिष्ठिर, तुम सत्यव्रती बने रहे, तुम जानते हो युद्धिष्ठिर तुम असत्य थे, युद्ध विजय के लिये छल का सहारा लिया, युद्ध जीत गए ..... पर यह युद्ध नही जीत पाओगे। आज भी उन तमाम युध्दों के अंधेरे वक़्तों की गूँज सुनाई देती है जिनसे इंसानी तारीख़ होकर गुज़री है. छल , कपट, राजनीति, अराजकता, भाई-भतीजावाद, स्वार्थ और अनैतिकता, यह सदा से जीवित अश्वत्थामा के सड़े-गले अंगों से रिसती मवाद है. जो अन्ध युग, में रह-रहकर लौटकर आते हैं।

सिफारिश, रिश्वत, तिकड़म घिनौनी सड़ांध से त्रस्त वातावरण, नग्न अनैतिकता से ये विचित्र युद्ध है | सनद रहे हे मानव, इस बार तेरा युद्ध तुझे स्वयं से लडना है।भ्रष्टाचार के विरुद्ध ये लडाई सिर्फ सरकारी लड़ाई न समझ , बल्कि यह एक व्यक्तिगत लड़ाई है जो तुझे भीतर और बाहर से लड़नी है। दृढ प्रतिज्ञ होकर युद्ध कर पंगु व्यव्स्था से, चतुर सियार और बेईमान गिरगिट से, प्रहार कर गद्दार भ्रष्टों के घिनौने मुखौटों पर।हे। मानव गांडीव उठा, प्रत्यंचा चढा, तू कर क्षमताओं का विस्तार, उत्तरोत्तर हो अग्रसर, निश्चय विजय वरन होगी, एक विजय नही है अंत, कर युध्द निरंतर "चिरंजीवी" भ्रष्टाचार से.....

दिग्विजयी भव:

तब एक सत्य उदघोष होगा "अश्वत्थामा मारा गया"।

गिरीश कुमार यादव

कार्यालय अधीक्षक (कार्य)

कविताएं

शहर और मैं

टैंकर का शोर भी, चिड़ियों का गाना भी
सड़कों पर कूड़ा भी, दिल में तराना भी
मुंबई के जीवन में सब तरफ दौड़-भाग
मुश्किल है जीना यहाँ, और है मस्ताना भी ।

फूल भरी डालियों से सजे पेड़ एक ओर
बदरंग - फटेहाल झुग्गियाँ हर ओर-छोर
एक तरफ बंगलों में, निस्सीम शांति है
बाहर है लेकिन दिन-रात बड़ा तेज शोर ।

लहरों के जादू से मन को छुड़ा करके
ट्रैफिक से बचते हुए, दफ्तर को आकर के
दफ्तर के मंच पर दिन भर का अभिनय
शाम ढलने आई, देखा घर आ करके ।

सागर के कोने पर सूरज की छाया है
फिर किसी चिड़िया ने शाम का गीत गाया है
फिर एक उम्मीद की शाम है सामने
फिर मन इस शहर के रंगों पर आया है ।

स्मृति वर्मा
वित्त सलाहकार एवं मुख्य
लेखा अधिकारी -II

आत्म चिंतन

चंदन सी हो शीतलता हमारी, महके खुशबू फूलों जैसी ।

छटा चाँदनी सी छिटके, धीरता हो धरा जैसी ।

हो हृदय विशाल समुद्र जैसा, दृढ़ता हो हिमगिरि जैसी ।

निश्छल, निष्कपट हो व्यवहार हमारा, कर्मठता हो चींटी जैसी।

शौर्य हमारा सिंह सा हो, तत्परता हो कृषक जैसी ।

चमक भास्कर जैसी हो, निर्मलता हो गंगा उदगम जैसी ।

शुद्धता हो सोने जैसी, विश्वसनीयता हो ईश्वर जैसी ।

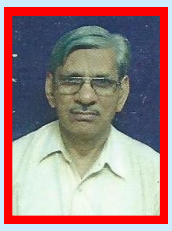

-राम महेश
परामर्शदाता ईएमयू विद्युत

चाँद उदित हुआ नभ में

देखो, चांद उदित हुआ नभ में
खुशियाँ हैं सबके मन में ।

अंधियारे काले जीवन में,
एक पुंज प्रकाश नज़र आया
दोपहर धूप की गर्मी में
जैसे बादल हो लहराया
आशाओं के पंख लगे
उड़ने को अब जी करता है ।

राष्ट्र प्रेम हो जन-जन के मन में,
हर व्यक्ति यही अब कहता है ।
काले बादल अब गुजर गए
छाई है एक नई आशा,
राष्ट्र एक हो, अमर प्रेम हो
और हो इसकी एक भाषा ।

मैं दूर कहाँ तुम से रह पाता हूँ

विचलित प्राणों के जीवन में
सांसों का अर्पण कर जाता हूँ
मानवता का अंतिम सुख
बस, तेरी बाँहों में पाता हूँ 1
विधि की कृति का तुम रूप प्रिये
हर पल पुलकित कर जाती हो ।
मंत्र मुग्ध कर, शांत सरिता सी,
मन की गति से बहती जाती हो ।
वह पल अनमोल हुआ जीवन में,
जो साथ कभी थे हमने काटे ।
सुख दुख के वह बीते क्षण
मिल जुल कर थे हमने बाँटे ।
मेरी कल्पना की अनमोल धरोहर,
नित गीत नए तुम पर गाता हूँ ।
दूर कहीं तुम मुझसे रह लो,
मैं दूर कहाँ तुम से रह पाता हूँ ।

– राजेश पाठक
अनुभाग अधिकारी/लेखा

ध्यान और आत्म साक्षात्कार

सुश्री संगीता वर्मा
कंपनी सचिव

हर मनुष्य के शरीर में रीढ़ की हड्डी के आधार पर त्रिकोणाकार हडडी में आध्यात्मिक ऊर्जा का सूक्ष्म और सुसुप्त/निष्क्रिय तार स्थापित होता है जिसे कुंडलिनी शक्ति कहते हैं ।

इस आध्यात्मिक ऊर्जा के बारे में कई महान विकसित आत्माओं / महापुरुषों, जैसे कि संत कबीर दास, तुकाराम, नामदेव इत्यादि ने वर्णन किया है । संत ज्ञानदेवा ने ज्ञानेश्वरी के माध्यम से कुंडलिनी शक्ति को प्रलेखित किया है ।

इस सूक्ष्म और चेतन आध्यात्मिक ऊर्जा यानी कुंडलिनी के जागरण से आत्मबोध/आत्म साक्षात्कार को पाया जा सकता है । जब यह घटना होती है, तो वह व्यक्ति अपने आप को पृथक नहीं महसूस करता, बल्कि संपूर्ण विश्व का हिस्सा बना हुआ महसूस करता है ।

कुंडलिनी जागरण के कई महत्व हैं । जीवन के मूल उद्देश्य की भावना, संपूर्णता महसूस करना और साथ ही साथ आत्म-ज्ञान को पाना है, जोकि दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में पूर्णतया उपेक्षित है ।

आत्मज्ञान किसी धर्म, समाज, नस्ल, जाति या रंग रूप पर आधारित नहीं होता । हर व्यक्ति अपनी आत्मा को पाने का और संतुलित जीवन जीने का अधिकार रखता है ।

कुंडलिनी जागरण से हमारी आत्मा जो कि हर देखी व अनदेखी (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष) चीजों से अवगत होने का स्रोत है, हमारे व्यक्तित्व के शाश्वत पहलू को प्रदान करती है । और इस तरह से हर व्यक्ति शाश्वत एवं शुद्ध ज्ञान से परिपूर्ण संतुलित जीवन जी सकता है । वह व्यक्ति हर परिस्थिति में आनंद व शांति को भी प्राप्त कर सकता है ।

मनुष्य ध्यान के द्वारा मानसिक, भावनात्मक व भौतिक जीवन में भी संतुलन ला सकता है ।

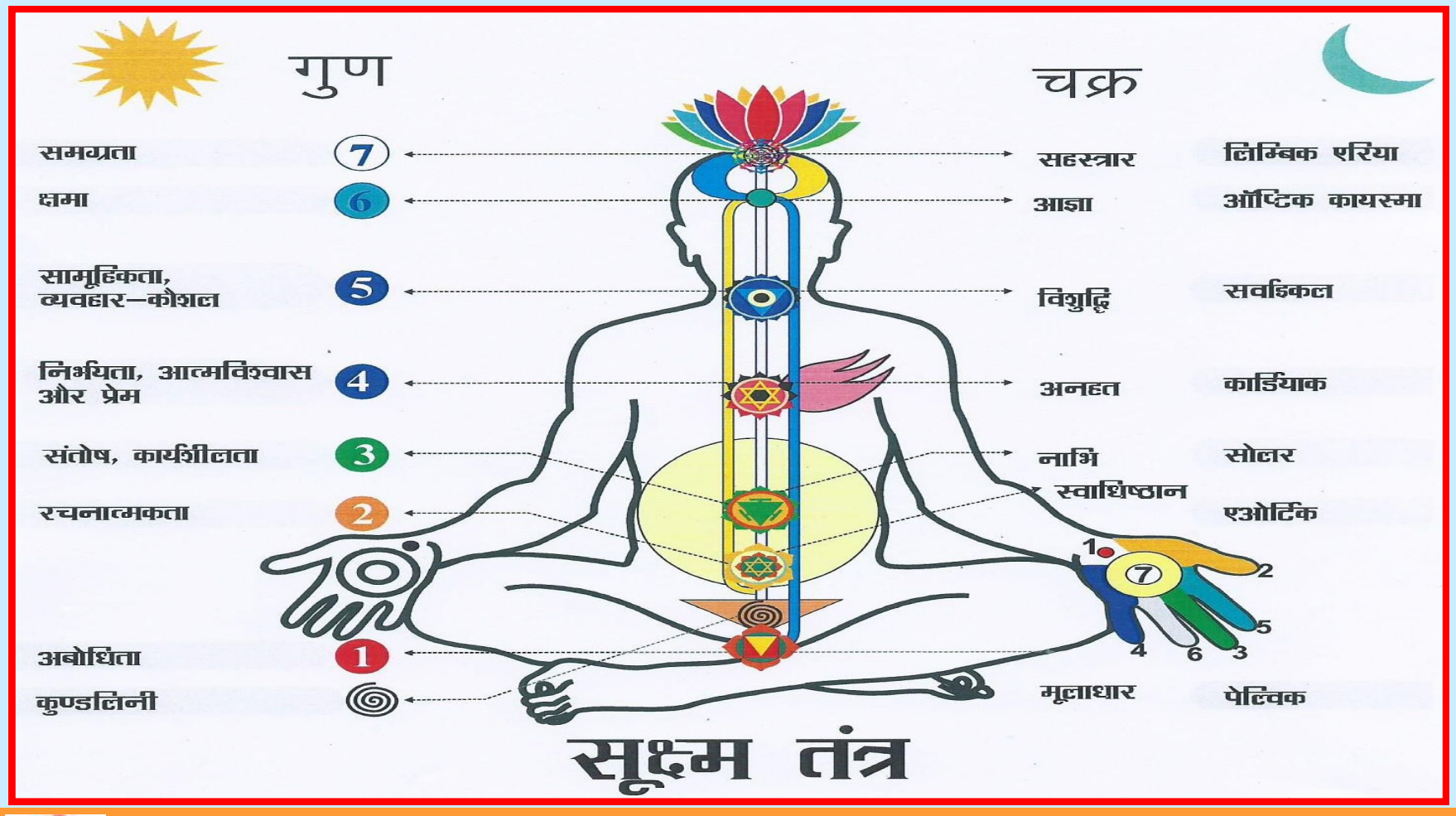

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की अध्यक्षता करतें हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री राकेश सक्सेना।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के समय सराहनीय कार्य के लिए **निर्दिष्ट कर्मचारियों** कों पुरस्कार प्रदान करते हुए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की कुछ झलकियाँ

मुबंई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लि.
दूसरी मंजिल, चर्चगेट स्टेशन भवन,
चर्चगेट, मुंबई 400020.